Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

डॉ0 मुकुन्द मोहन पाण्डेय
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डिर्पाटमेण्ट ऑफ स्पेशल एजुकेशन (एच.आई.)
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश।

सारांश– समस्या कथन जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 50 सामान्य बालक एवं 50 दिव्यांग बालक को सम्मिलित किये गये है। उपकरण के रूप में के.एस. मिश्र द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण परिसूची एवं अरुण कुमार सिंह एवं अल्पनासेन गुप्ता द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य बैटरी का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए टी–अनुपात एवं पियर्सन गुणनफल आघूर्ण–सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकी विधि का प्रयोग कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये है। अतः अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए– जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण में अन्तर है अर्थात् सामान्य बालकों के पारिवारिक वातावरण दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण की अपेक्षा उच्च पाया गया। जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर है अर्थात् जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य बालकों के मानसिक स्वास्थ्य दिव्यांग बालकों की अपेक्षा उच्च पाया गया। जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। जूनियर हाईस्कूल स्तर पर दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

कुँजी शब्द– जूनियर हाईस्कूल, सामान्य, दिव्यांग, छात्र–छात्राएँ, पारिवारिक वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य, टी–अनुपात, सहसम्बन्ध।

भूमिका– परिवार एक आधारभूत संस्था है। इसे जीवन की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। बालक के व्यक्तित्व का विकास वंशानुगत संस्कारों तथा पर्यायवरण से क्रिया प्रतिक्रिया करते हुये धीरे–धीरे आगे बढ़ता है। परिवार का व्यक्ति के शैक्षिक, बौद्धिक, व्यवसायिक सामाजिक आदि सभी प्रकार के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। परिवार एक या एक से अधिक दम्पत्तियों एवं इनके बच्चों का वह सामाजिक समूह है जिनके मध्य रक्त सम्बन्ध होता है। इन पारिवारिक सदस्यों के मध्य परस्पर उत्तरदायित्वपूर्ण सम्बनधों को ही 'पारिवारिक सम्बन्ध' कहा जाता है।

विद्यालयी औपचारिक शिक्षण प्रारम्भ होने से पूर्व अभिभावकों द्वारा ही बालकों में अनेकानेक संस्कारों एंव शिक्षा का समावेश होता है। विद्यालयी शिक्षा प्रारम्भ हो जाने के पश्चात भी बालक के शैक्षिक विकास एवं ज्ञान का विकास अधिकांशतः पारिवारिक परिवेश में ही प्रोन्नत होता है इसलिए शिक्षा का कोई भी स्तर हो, उस पर पारिवारिक एंव पारिवारिक सम्बन्धों का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

पेस्टालॉजी के अनुसार–''परिवार प्यार तथा स्नेह का केन्द्र, शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान व बालक की प्रथम पाठशाला है।''

वे अभिभावक जो अपने बच्चों को यह अनुभव कराते है कि वह परिवार के महत्वपूर्ण सदस्य है। वे अपने बच्चों को निश्चित मात्रा में स्वतन्त्रता देते हैं तथा उन्हें पारिवारिक उत्तरदायित्व का अनुभव भी कराते हैं। इस प्रकार अभिभावक अपनें बच्चों को उनकी रुचि एंव योग्यतानुसार निश्चित क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते है। इस प्रकार के पारिवारिक सम्बन्ध बालक के शैक्षिक विकास को गुणात्मक रूप से प्रभावित करते है। इस पारिवारिक वातावरण में प्रायः बालक उच्चतर की शैक्षिक बुद्धिलब्धि प्राप्त करते है। किन्तु आज के भौतिकवादी युग में बदलती सामाजिक व्यवस्था से बदलते हुए मूल्यों से भारत जैसे परम्परागत देश में बालकों को अनेक अनुभवों से गुजरना पड़ता है। अधिकांश लोग (माता–पिता) अपने बच्चों को समझाने में असमर्थ है। माता–पिता की अभिवृत्तियों में भी परिवर्तन हो रहे है, जिसमें घर तथा विद्यालय में समायोजन करने में बच्चों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है अर्थात वह ठीक प्रकार से समायोजन नहीं कर पा रहे हैं, जिसके कारण उनमें अनेक प्रकार के लक्षण (संवेग) उत्पन्न हो जाते है जैसे कुण्ठा, शीध्र उत्तेजित हो जाना, नई परिस्थितियों में अपनी विचारधराओं को सुव्यस्थित न कर पाना, अपनी योग्यता पर विश्वास न होना आदि। इन सबका प्रभाव बच्चों की वृद्धि एंव मानसिक स्वास्थ्य पर यथेष्ट रूप से पड़ता है। यह प्रभाव वांछनीय नहीं है और आवश्यकता इस बात की है कि इन बिन्दु पर शीघ्रता शीघ्र ध्यान दिया जाये।

माता–पिता का व्यवहार, लगाव, सम्मान, सहयोग और सहनशीलता से युक्त होता है तो किशोरों का मानसिक विकास जीवन में अच्छा समायोजन करने की ओर क्रियाशील रहता है। कभी –कभी परिवार में बालक समायोजन पर माता–पिता की अभिवृत्तियों का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। यदि कोई पिता अपने पुत्र के साथ या माता अपने पुत्र के साथ तानाशाही का व्यवहार करती है तो स्पष्ट है कि समायोजन सम्बन्धी कठिनाइयां उत्पन्न होगी। माता अपने बच्चों की तनिक भी चिन्ता नहीं करती और वे उन्हें भाग्य पर छोड़ देती है। ऐसी दशा में भी बच्चे बिगड़ जाते है। और तनावपूर्ण व असन्तुष्टि की भावना से पनपने लगते है इस कारण किसी बाहरी व्यक्ति के साथ समायोजन में कठिनाई महसूस करतें है और वह प्रसिद्धि की रेखा से कोसों दूर पीछें रह जाते है।

बालक के मानसिक शक्तियों के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों में वंशानुक्रम, परिवार, परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थितियाँ, स्वास्थ्य, माता–पिता की शिक्षा तथा विद्यालय के वातावरण महत्वपूर्ण कारक हैं। वंशानुक्रम और वातावरण मानसिक विकास के लिए सर्वाधिक उत्तरदायी माने गये हैं। यह वातावरण बालक के लिए दो प्रकार का होता है– प्रथम पारिवारिक और द्वितीय सामाजिक।

पारिवारिक वातावरण के विभिन्न अवयव यथा– परिवार में एकजुटता, अभिव्यक्ति के अवसर, संघर्ष की स्थितियाँ, परिवार में छात्र की स्वीकार्यता और देखभाल, परिवार में भीतर उसकी आत्मनिर्भरता, परिवार का सक्रिय मनोरंजनात्मक झुकाव, उसका संगठन और छात्र पर परिवार का नियंत्रण इतने महत्वपूर्ण कारक है कि जो बालक के निर्णय लेने, तर्क करने, चिंतन मनन और विश्लेषण करने तथा किसी समस्या पर अभिव्यक्ति देने का साहस कर पाने तथा उसके समाधान के लिए तत्पर होने और अंततः सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण हो सकते हैं। इन अवयवों का छात्र के मानसिक शक्ति और सक्रियता से संबंध होना स्वाभाविक है।

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान सम्बन्धी क्रिया–कलाप केवल मानसिक चिकित्सकों द्वारा ही नहीं अपितु अध्यापक संरक्षक माता– पिता तथा समाज सुधारक आदि द्वारा किया जा सकता है। सत्य तो यह है कि मानव मनोविज्ञान का ज्ञान तथा उसमें अन्तर्दृष्टि होने पर कोई भी व्यक्ति मानसिक आरोग्य में सहायक हो सकता है। इस तरह मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का उद्देश्य केवल मानसिक रोगों का उपचार अथवा रोकथाम मात्र न होकर प्रत्येक व्यक्ति में एक ऐसे व्यक्ति का विकास करना है

जिसका वातावरण से अच्छी प्रकार सामंजस्य हो जिसके बौद्धिक, भावात्मक और शारीरिक पहलू भली प्रकार सन्तुलित हो, जो सन्तुष्ट और आशावादी हो और जिसका अपने साथियों से व्यवहार करने में कम से कम संघर्ष तथा तनाव का अनुभव हो। अतः मानसिक स्वास्थ्य का उद्देश्य भली प्रकार समायोजन, सुलझा हुआ और सन्तुलित व्यक्तित्व का निर्माण करना है।

प्रायः देखा जा रहा है कि दिव्यांग बच्चों का व्यवहार समाज में प्रचलित मूल्यों के अनुकूल नहीं है जिसके कारण अध्यापक माता–पिता एवं समाज के अन्य व्यक्ति दिव्यांग बच्चों के व्यवहार से सतुष्ट नहीं है यह समस्या समस्त समाज में विष के समान व्याप्त है। जिसका निवारण भिन्न –भिन्न व्यक्तियों ने करने की चेष्टा की है। तथा सरकार ने भी विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम चलाये जिसमें कि इनकी समस्याओं को सुलझाया जा सके परन्तु फिर भी समस्यायें निरन्तर बढ़तीं जा रही हैं वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण समाज का ढांचा बदल रहा है। और जीवन की गति अपेक्षाकृत अधिक तीव्र हो गयी है। संयुक्त परिवारों का टूटना तथा छोटे परिवारों में दोनों सदस्य माता–पिता के व्यवसाय में कार्यरत रहतें। इस कारण उनकें पास इतना समय नहीं कि वह अपनें बच्चों की देखभाल करें और उनका मार्ग निर्देशन करें। माँ अपने व्यवसाय तथा सामाजिक कार्यों में लगे रहने के कारण बालक में होने वाले शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक परिवर्तन या विकास को नहीं जान पाती न ही जानने की कोशिश करती है। क्योंकि व्यवसाय द्वारा उन्हें धन, सामाजिक प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। जो कि उनकी उन्नति की सार्थक हैं और जो माँ घर में रहती है। तथा अव्यवसायिक है वह बाहरी वातावरण के बदलते परिवेश को देखकर उसी रंग ढंग को अपनाती है और इस होड़ में लगी रहती हैं, कि सामाजिक तथा व्यवसासियक कार्यों में कार्यरत महिलाओं का दर्जा पा सकें। इस कारण वह घर में रहते हुए बालकों की क्रियाओं, गतिविधियों को महसूस करते हुए देखते हुए ढंग से संचालित नही कर पाती और नही उन्हें उचित निर्देशन व सहभोग कर पाती है। जबकि बालक चाहता है। कि उसे महत्वपूर्ण भूमिका दी जाये उसके विचारों, कार्यो, सुझावों को सुना जाय तथा महत्व दिया जाए परन्तु उसके साथ न्याय नहीं होता है। बल्कि उसे नासमझ व छोटा ठहराते हुए बड़ों के कार्यों में हस्तक्षेप न करने की दलील पेश की जाती है। इस परिस्थितिजन्य वातावरण को देखते हुए बालक प्रक्रियावादी हो जाता है।

इस जटिल वातावरण में वह अपने विचारों, कार्यो सुझावों की अभिव्यक्ति ढंग से नही कर पाता जिसके कारण दिव्यांग बच्चों में समायोजन की समस्या पैदा होती है।

समस्या कथन– जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया है–

1. जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
2. जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
3. जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
4. जूनियर हाईस्कूल स्तर पर दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

1. जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
4. जूनियर हाईस्कूल स्तर पर दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अध्ययन विधि : प्रस्तुत अध्ययन कार्य की प्रकृति को ध्यान में रखतें हुए वर्णनात्मक अनुसंधान का एक प्रकार **''सर्वेक्षण विधि''** का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या– प्रस्तुत अध्ययन प्रयागराज जनपद के जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श का चयन : प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रतिदर्श का चयन उपर्युक्त जनसंख्या को आधार मानकर किया गया है। अध्ययन की सुविधा हेतु प्रयागराज जनपद के जूनियर हाईस्कूल विद्यालयों का चयन किया गया है उक्त विद्यालय के 100 विद्यार्थी जिसमें 50 सामान्य एवं 50 दिव्यांग बालकों का चयन यादृच्दिक विधि के माध्यम से किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण : डा0 करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित ''पारिवारिक वातावरण परिसूचि'' तथा अरून कुमार सिंह एवं डा0 अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य बैटरी का प्रयोग किया है।

सांख्यिकी गणना– प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात तथा पियर्सन गुणनफल आघूर्ण–सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण–

H_{01} जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–1

जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात की तालिका

क्र0 सं0		न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर $D=(M_1 \sim M_2)$	मानक त्रुटि (δ_D)	टी–मान t-value	सारणी मान
1.	सामान्य बालक	50	241.46	19.08	18.08	6.41	2.82*	1.98 df=98
2.	दिव्यांग बालक	50	223.38	24.94				

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

विश्लेषण एवं व्याख्या– प्रस्तुत सारणी में जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण का मध्यमान क्रमशः 241.46 एवं 223.38एवं मानक विचलन क्रमशः 19.08 एवं 24.94 है। दोनों मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात 2.82 प्राप्त हुआ जो कि मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण में अन्तर है अर्थात् सामान्य बालकों के पारिवारिक वातावरण दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण की अपेक्षा उच्च पाया गया।

H_{02} जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–2

जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात की तालिका

क्र0 सं0		न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर $D=(M_1 \sim M_2)$	मानक त्रुटि (δ_D)	टी–मान t-value	सारणी मान
1.	सामान्य बालक	50	83.02	13.85	13.24	3.87	3.42*	1.98 df=98
2.	दिव्यांग बालक	50	69.78	12.95				

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

विश्लेषण एवं व्याख्या– प्रस्तुत सारणी में जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान क्रमशः 83.02 एवं 69.78 एवं मानक विचलन क्रमशः 13.85 एवं 12.95 है। दोनों मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात 3.42 प्राप्त हुआ जो कि मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर है अर्थात् जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य बालकों के मानसिक स्वास्थ्य दिव्यांग बालकों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

H_{03} जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

तालिका–3

जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध गुणांक

क्रमांक	समूह	पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान	स्वतंत्र्यांश (N-2)	सार्थकता स्तर
3.	सामान्य बालक	0.4735	48	सार्थक

सारणी से स्पष्ट है कि जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.4735 है जो 48 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.273 से अधिक है। यह मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है व शून्य परिकल्पना अस्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

H_{04} जूनियर हाईस्कूल स्तर पर दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

तालिका–4

जूनियर हाईस्कूल स्तर पर दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध गुणांक

क्रमांक	समूह	पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान	स्वतंत्र्यांश (N-2)	सार्थकता स्तर
3.	विद्यार्थी	0.4050	48	सार्थक

सारणी से स्पष्ट है कि जूनियर हाईस्कूल स्तर पर दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.4050 है जो 48 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.273 से अधिक है। यह मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है व शून्य परिकल्पना अस्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जूनियर हाईस्कूल स्तर पर दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन में निम्न शून्य परिकल्पनाओं के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

- जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण में अन्तर है अर्थात् सामान्य बालकों के पारिवारिक वातावरण दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण की अपेक्षा उच्च पाया गया।
- जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग बालकों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर है अर्थात् जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य बालकों के मानसिक स्वास्थ्य दिव्यांग बालकों की अपेक्षा उच्च पाया गया।
- जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामान्य बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।
- जूनियर हाईस्कूल स्तर पर दिव्यांग बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

सुझाव–

- विद्यार्थियों को मानसिक स्वास्थ्य को अच्छा बनाये रखने के लिए कुण्ठा, तनाव एवं द्वेषभावना का अपने से दूर रखना चाहिए।
- विद्यार्थियों को एक–दूसरे के साथ मित्रवत् व्यवहार तथा एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए।
- विद्यार्थियों को विद्यालय में खेलते हुए एकजुट की भावना को विकसित करना चाहिए जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा हो एवं मूल्यों में वृद्धि हो।
- विद्यार्थियों को अपने से बड़ों का, अध्यापकों–अध्यापिकाओं का आदर– सम्मान करना चाहिए तथा समाज में सभी के साथ एक सामाजिक भावना से रहना चाहिए जिससे उनमें मूल्यों की वृद्धि हो सके।
- विद्यार्थियों को अपने मानसिक स्वास्थ्य अच्छा करने के लिए आपस में प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, विषयों से सम्बन्धित प्रतियोगिता करनी चाहिए एवं ज्ञान–विज्ञान से तथा मूल्यों से सम्बन्धित किताबों को पढ़ना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.सिंह, अंकुर (2000). किशोर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति एवं समायोजन में उनके आत्मविश्वास की भूमिका, पी–एच.डी. कानपुर : सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय ।

2.शर्मा, अरविन्द (2002). उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की बुद्धिलब्धि, शैक्षिक रुचि, आकांक्षा स्तर एवं पारिवारिक सम्बन्धों से शैक्षिक उपलब्धि का सम्बन्ध; एक तुलनात्मक अध्ययन, पी–एच0डी0 थीसिस, कानपुर : दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय।

3.मिश्रा, गगन (2013). किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद : नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय।

4.कुमार, अश्वनी (2013). हाईस्कूल स्तर के अनुदानित तथा गैर अनुदानित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, कानपुर : छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय।

5.शुक्ला, अनामिका (2011), ने जूनियर हाईस्कूल के विद्यालयों के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद : नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय।

6.कुमार, राकेश (2013). दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, पिलखुवां हापुड़ पंचशील नगर : मोनाड़ विश्वविद्यालय।

7.बरनवाल, नागेश्वरनाथ (2014). श्रवण बाधित बालकों को शिक्षा में मिलने वाली रियायतों एवं सुविधाओं के प्रति उनके माता–पिता की जागरूकता का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, फैजाबाद : डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय।

8.रंजन, तुषार (2014). माध्यमिक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक दुश्चिंता का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद : नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय।

9.पाल, जितेन्द्र (2013). चित्रकूट जनपद में स्थित जे.आर.एच.यू. में व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर रहे श्रवण बाधित बालकों के शैक्षणिक कार्यक्रम में आने वाली समस्याओं का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद : नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय।